सामाजिक लोकतंत्र

सामाजिक लोकतंत्र एक राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक विचारधारा है जो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के ढ़ाँचे में सामाजिक न्याय के लिए और सामूहिक सौदाकारी के इंतजाम वाली एक नीति व्यवस्था के लिए प्रतिनिधिक लोकतंत्र, आय पुनर्वितरण के उपाय, सामान्य हित हेतु अर्थव्यवस्था का विनियमन व कल्याण राज्य के प्रावधानों संबंधी प्रतिबद्धता को बढ़ावा देने के लिए, आर्थिक और सामाजिक हस्तक्षेपों का समर्थन करती है।

संविधान निर्माता डॉ० बाबासाहब आंबेडकर ने नवंबर 1949 में संविधान सभा के अपने अंतिम भाषण में भारत के लिए "सामाजिक लोकतंत्र" की परिभाषा समझाते हुए कहा था, 'सामाजिक लोकतंत्र का अर्थ है, एक ऐसी जीवन पद्धति जिसमें स्वतंत्रता, समता और बंधुता समाज-सिद्धांत के मूल सिद्धांत होंगे।"

सामाजिक समता लाने में बाबासाहब के इस युग-परिवर्तक ध्येय का पहला चरण तब पूरा हुआ, जब उन्होंने देश को ऐसा न्यायपूर्ण संविधान दिया, जिसमें धर्म, जाति, संप्रदाय, विचारधारा के आधार पर किसी व्यक्ति के साथ कोई भेदभाव नहीं है। इस ध्येय का दूसरा चरण तब पूरा हुआ, जब उन्होंने आरक्षण के माध्यम से दलित समाज के लिए शिक्षा और नौकरियों के दरवाजे खोल

From the desk of DATE

दिए ताकि हमारे समाज के वे बंधु भी हर तरह का ज्ञान प्राप्त कर सके और स्वयं की वह देश की उन्नति में योगदान कर सके। उनके इस महान ध्येय का तीसरा चरण तब पूरा होगा, जब देश के हम सभी नागरिक अपनी जाति, संप्रदाय और धर्म आदि के भेदभाव से ऊपर उठकर एकजुट हो जाए और साथ मिलकर देश की उन्नति हेतु कार्य करे।

सामाजिक लोकतंत्र का विकास

सामाजिक लोकतंत्र एक राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक विचारधारा है जो उदार लोकतांत्रिक राजनीति और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के ढाँचे के भीतर सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के लिए आर्थिक और सामाजिक हस्तक्षेप का समर्थन करता है। इसे पूरा करने के लिए प्रयुक्त प्रोटोकॉल, मानदंड प्रतिनिधि और सहभागिता लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्धता शामिल करते हैं; सामान्य ध्यान में आय पुनर्वितरण और अर्थव्यवस्था के विनियमन के उपायों और कल्याण राज्य प्रावधान। इस प्रकार सामाजिक लोकतंत्र का लक्ष्य पूंजीवाद की स्थिति को और अधिक लोकतांत्रिक, समतावादी और ठोस परिणामों के कारण बनाना है। सोशल डेमोक्रेटिक पार्टियों द्वारा दीर्घकालिक शासन और नॉर्डिक

Neelgagan

Scanned with CamScanner

देशों में सामाजिक आर्थिक नीति विकास पर इनके प्रभाव के कारण 20 वी शताब्दी के उत्तरार्ध में नीतिगत मंडल "सामाजिक लोकतंत्र" नॉर्डिक मॉडल से जुड़ा हुआ है।

सामाजिक लोकतंत्र एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में उभरा जिसने रुढ़िवादी मार्क्सवाद से जुड़े संक्रमण के क्रांतिकारी दृष्टिकोण के विपरीत स्थापित राजनीतिक प्रक्रियाओं का उपयोग करके पूंजीवाद से समाजवाद तक एक विकासवादी और शांतिपूर्ण संक्रमण की वकालत की। पश्चिमी यूरोप में युद्ध के बाद के युग के प्रारंभ में, सामाजिक लोकतांत्रिक दलों ने सोवियत संघ में वर्तमान में स्टालिनिस्ट राजनीतिक और आर्थिक मॉडल को खारिज कर दिया या तो समाजवाद के वैकल्पिक मार्ग या पूंजीवाद और समाजवाद के बीच समझौता करने के लिए खुद को समर्पित किया। इस अवधि में, सामाजिक डेमोक्रेट ने सार्वजनिक स्वामित्व के तहत केवल आवश्यक अल्पसंख्यकों और सार्वजनिक स्वामित्व के तहत केवल आवश्यक अल्पसंख्यकों और सार्वजनिक सेवाओं के अल्पसंख्यक के साथ निजी संपत्ति के प्रावधान के आधार पर एक मिश्रित अर्थव्यवस्था को गले लगा लिया। नतीजन सामाजिक लोकतंत्र पूंजीवादी अर्थशास्त्र, राज्य हस्तक्षेप और कल्याणकारी राज्य से जुड़ा हुआ था, जबकि गुणात्मक रूप से अलग समाजवादी

Scanned with CamScanner

From the desk of DATE

आर्थिक प्रणाली के साथ पूंजीवादी व्यवस्था को बदलने के पूर्व लक्ष्य को छोड़कर।

आधुनिक सामाजिक लोकतंत्र को असमानता को रोकने, वंचित समूहों और गरीबों के उत्पीड़न के उद्देश्य से नीतियों के प्रति प्रतिबद्धता की विशेषता है जिसमे वृद्ध, बाल देखभाल, शिक्षा, स्वास्थ्य और श्रमिकों के मुआवजे की देखभाल जैसे सार्वभौमिक रूप से सुलभ सार्वजनिक सेवाओं के समर्थन शामिल है। सामाजिक लोकतांत्रिक आंदोलन में श्रम आंदोलन और ट्रेड यूनियनों के साथ भी मजबूत संबंध है और कर्मचारियों के लिए सह-निर्धारण के रूप में आर्थिक क्षेत्र में राजनीति से परे लोकतांत्रिक निर्णय लेने के उपाय के साथ-साथ श्रमिकों के लिए सामूहिक सौदेबाजी अधिकारों का समर्थन करने के उपाय भी है।

जर्मन में सोशल डेमोक्रेसी, सोशियालडेक्रेटरी आदि जर्मन में। 19 वी शताब्दी के अंत में जर्मन, रूस, ऑस्ट्रिया जैसे देशों में, मार्क्सवाद पर आधारित सामाजिक लोकतंत्र है। हालांकि इस स्थिति में धीरे-धीरे एक संशोधित प्रवृति थी, प्रथम विश्वयुद्ध में उसने अपनी सरकार की युद्ध नीति समाप्त कर दी, दूसरा अंतर्राष्ट्रीय ढह गया। उसके बाद जब रूसी क्रांति के प्रभाव में प्रत्येक देश में कम्युनिस्ट पार्टी का गठन हुआ, तो सामाजिक लोकतंत्र ने स्पष्ट रूप से सामाजिक सुधारवाद

Scanned with CamScanner

का एक दृष्टिकोण लिया और यह मार्क्सवाद का सामना करना था। सिद्धांत रूप में यह आवश्यक रूप से व्यवस्थित नहीं है, जिसमें कैबियन समाजवाद, सैंडिका रिजम इत्यादि शामिल है। जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी और ब्रिटिश लेबर पार्टी के रूप में संसद प्रणाली के ढांचे के आधार पर धन के पुनर्वितरण के बराबर समानता के लक्ष्य नीतियाँ आधुनिक है युग, लेकिन 1950 के उत्तरार्ध के बाद से "संरचनात्मक सुधार सिद्धांत" भी इसे सामाजिक लोकतंत्र कहा जा सकता है। सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के पतन के बाद समाजिक लोकतंत्र की समीक्षा की गई है।

स्पष्ट रूप से सामाजिक लोकतांत्रिक कल्याण नीतियों साथ उदार अर्थशास्त्र को फ्यूज करना है, 1990 के दशक में विकसित एक विचारधारा है और सामाजिक लोकतांत्रिक दलों से जुड़ा हुआ है। कुछ विश्लेषकों ने इसके बजाय नवउदार आंदोलन के रूप में चिह्नित किया है।

सामाजिक प्रजातंत्र का अर्थ

सामाजिक प्रजातंत्र एक राजनीतिक विचारधारा है जिसका उद्देश्य सुधारवादी और धीमी गति से प्रजातांत्रिक समाजवाद की स्थापना करना है दूसरे शब्दों में सामाजिक प्रजातंत्र को ऐसी व्यवस्था माना जा सकता

Scanned with CamScanner

From the desk of DATE

है जो राज्य का सार्वभौमिक कल्याण करते हुए अर्थव्यवस्था को पूंजीवादी अर्थव्यवस्था रहते हुए भी विकसित करना चाहता है।

सामाजिक प्रजातंत्र की उत्पत्ति 19 वी सदी में जर्मनी में हुआ। यह अंतरराष्ट्रीय क्रांतिकारी समाजवाद और साम्यवाद दोनों ही विचारधारा से प्रभावित था। सामाजिक प्रजातंत्र को अच्छी तरह से समझने के लिए निम्नलिखित दो तथ्यों पर ध्यान देना आवश्यक है-

1. प्रजातांत्रिक समाजवाद मार्क्सवाद और उदारवाद के बीच का रास्ता है। इस अर्थ में समाजिक प्रजातंत्र मार्क्सवाद और उदारवाद के बीच की विचारधारा है। वास्तव में सामाजिक प्रजातंत्र के प्रवक्ता बिना क्रांति किए समाज में सामाजिक प्रजातंत्र लाना चाहते हैं। सामाजिक प्रजातंत्र शांतिपूर्ण इसलिए माना जाता है क्योंकि यह बुलेट की जगह बैलेट का प्रयोग करता है।

2. दूसरा तथ्य यह है कि सामाजिक प्रजातंत्र के प्रवक्ताओं ने राज्य को कल्याणकारी राज्य के रूप में देखा है। यह राज्य समानता और स्वतंत्रता पर जोर देता है, आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता को गति प्रदान करता है। इस प्रकार सामाजिक प्रजातंत्र एक राजनीतिक योजना नहीं है न ही मार्क्सवाद और उदारवाद के बीच का रास्ता है।

सामाजिक प्रजातंत्र वास्तव में उदारवाद और मार्क्सवाद का एक विकल्प स्वरूप है।

Neelgagan

Scanned with CamScanner

सामाजिक प्रजातंत्र की जन्म की कहानी

औद्योगिक क्रांति के बाद सबसे पहले उदारवाद एक राजनीतिक और आर्थिक विचारधारा के रूप में उभरी। 19 वी शताब्दी में पूंजीवाद पूरे यूरोप में फैल गया। इस प्रकार उदारवाद ने e यवस्था परिवर्तन के लिए अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया और तत्कालीन परिवेश के लिए यह उचित भी था। उदारवादियों ने विकास पर काफी विश्वास किया और कुछ उदारवादियों ने अधिक से अधिक लोगो की अधिकतम प्रसन्नता पर अर्थव्यवस्था को स्थापित करने का प्रयास किया। राज्य e यक्तियों के आर्थिक मामले में नहीं के बराबर करता था। समय और विचारधारा में इतना तालमेल था कि 19 वी सदी को उदारवाद का युग कहा जाने लगा।

इस शताब्दी के मध्य आते - आते उदारवाद का e यवहारिक परिणाम स्पष्ट होने लगा। इस उदारवाद ने सामाजिक और समानता को जन्म दिया। यह असमानता इतनी बढ़ गई कि लोग उदारवाद का विकल्प ढूँढने लगे। 19 वी सदी के अंत के दशक में मार्क्सवाद उदारवाद को चुनौती देते हुए उभरकर सामने आया। ऐतिहासिक भौतिकवाद और वर्ग संघर्ष ने इस धारणा को मजबूत किया कि इतिहास में परिवर्तन e यक्ति की चेतना से नहीं बल्कि आर्थिक विकास और सामाजिक संबंध से होता है।

जैसे - जैसे समय बीतने लगा मार्क्सवाद

Scanned with CamScanner

From the desk of DATE

समस्याओं में उलझने लगा। सबसे पहले मार्क्सवाद की भविष्यवाणी गलत सिद्ध होने लगी। उदाहरण स्वरुप मार्क्स ने कहा कि एक वर्गविहिन और राज्यविहिन समाज की स्थापना होगी। यह पूरी तरह असत्य सिद्ध हुआ। बहुत से पूर्वी यूरोपीय देशों ने मार्क्सवाद को अपनाया और वे सफल नही हो सके।

इस तरह वामपंथी विचारधाराएँ समस्याओं से घिरने लगी। पूंजीवाद फिर से विकसित होने लगा लेकिन सामाजिक और आर्थिक असमानता ने समाज को वर्गों में बाँट दिया।

19 वी शताब्दी के अंत में बहुत से समाजवादी विचारकों ने यह अनुभव किया कि समाज में परिवर्तन लाने के लिए मानवीय क्रियाकलाप जरुरी है ताकि सभी व्यक्तियों के बीच असमानता का अंत हो सके। इस परिवेश में दो तरह की विचारधाराओं का जन्म जो निम्नलिखित है :-

(1) पहला विचार जार्ज सोरेन का था। उसके अनुसार एक हिंसात्मक क्रांति द्वारा विद्यमान व्यवस्था को उखाड़ फेंकना था ताकि भविष्य में एक नयी व्यवस्था कायम हो सके।

(2) दूसरा विचार एडवर्ड बर्नस्टीन का था जिसके अनुसार एक प्रजातांत्रिक और विकासवादी तरीके से विद्यमान व्यवस्था को आगे बढ़ाना था।

[एडवर्ड बर्नस्टीन और]x जार्ज जहाँ (बर्नस्टीन) की

Neelgagan

विचारधारा ने फांसीवाद के जन्म का मार्ग प्रशस्त किया वही बर्नस्टीन के विचार ने सामाजिक प्रजातंत्र के विचारधारा को जन्म दिया।

एडवर्ड बर्नस्टीन ने मार्क्सवाद के दोनों सिद्धांत पर प्रहार किया एक है ऐतिहासिक भौतिकवाद और दूसरा वर्ग संघर्ष। बर्नस्टीन ने एक वैकल्पिक व्यवस्था की बात की थी जो वर्ग सहयोग पर आधारित था। पूंजीवाद के संबंध में उसकी यह धारणा थी कि वह संपत्ति के केन्द्रीकरण को बहुत ज्यादा प्रोत्साहित नहीं करता। अतः उसके अंत होने का इंतजार करना और समाजवाद के उदय की प्रतिक्षा बेकार बात है। अतः उसने विद्यमान व्यवस्था को ही सुधारने का प्रयास करना ज्यादा लाभदायक माना। बर्नस्टीन की मान्यता थी कि समाजवाद का अर्थ सिर्फ संपत्ति का विनाश करना नहीं बल्कि सुधार के साथ संपत्ति का विकास करना भी था। वह पूंजीवादी व्यवस्था में सुधारकर एक ऐसी व्यवस्था लाना चाहता था जहाँ संपत्ति का केन्द्रीकरण नहीं हो और धीरे-धीरे स्वतः समाजवादी विकसित हो जाए। बर्नस्टीन और उसके समर्थकों ने समाजवाद के सिद्धांत को अपनाना जरुरी नहीं समझा। इस प्रकार बर्नस्टीन और सामाजिक प्रजातंत्र के अन्य प्रवक्ता उस प्रकार की व्यवस्था बनाना चाहते है जिसमें राज्य और बाजार तथा व्यक्ति और समुदाय में एक प्रकार का संतुलन हो।

Scanned with CamScanner

From the desk of DATE

सामाजिक प्रजातंत्र की विशेषताएँ

(1) सामाजिक प्रजातंत्र के प्रवक्ता शांतिपूर्ण और विकासवादी बदलाव के माध्यम से अर्थव्यवस्था में परिवर्तन लाना चाहते है और पूंजीवादी व्यवस्था को सुधारकर प्रस्तुत करना चाहते है।

(2) सामाजिक प्रजातंत्र के अनुसार एकमात्र संवैधानिक राजनीतिक व्यवस्था प्रतिनिधित्वमक प्रजातंत्र है जिसके अंतर्गत कानून के शासन को स्थापित किया जा सकता है और स्वीकार किया जा सकता है।

(3) यह निर्णय निर्माण की प्रक्रिया को प्रजातांत्रिक बनाना चाहता है और राजनीतिक प्रजातंत्र के शर्त पर आर्थिक प्रजातंत्र लाने की गारंटी देना है।

(4) यह निश्चित अर्थव्यवस्था का समर्थन करना है और पूंजीवाद के उन बुराइयो जैसे असमानता, गरीबी, शोषण आदि का विरोध करता है।

(5) यह सार्वभौमिक सामाजिक अधिकार की बात करता है जिसमें सभी के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, बाल कल्याण आदि पर ध्यान दिया जाए।

(6) सामाजिक प्रजातंत्र मजदूर संघ की क्रांति से जुड़ी हुई विचारधारा है और मजदूरो के सामूहिक अधिकारो का समर्थन करती हो।

(7) सामाजिक प्रजातंत्र उदारवादी प्रजातांत्रिक व्यवस्था को स्वीकार करती है और मानती है कि राजनीतिक परिवर्तन शांति और संवैधानिक तरीके से किस प्रकार किया जाए।

Neelgagan

Scanned with CamScanner